डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

X Paper
कामायनी CC-X

प्रश्न. जयशंकर प्रसाद द्वारा विरचित 'कामायनी' काव्य के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिए।

मौलिक दृष्टि से किसी भी महाकाव्य की महानता दो बातों पर निर्भर करती है — (i) जो कहा गया हो, वह महान हो और (ii) जैसे कहा गया है, महान गुणों से पूर्ण हो।

सर्वप्रथम, आचार्य भामह ने महाकाव्य की परिभाषा दी थी। उन्होंने कहा था — "अनेक कथानक वाला, महान चरित्रों से समन्वित, आकृष्ट शैली में लिखित, नाटकों के पाँच संधियों में से युक्त, जीवन के विविध रूपों और कार्यों का वर्णन करने वाला महाकाव्य कहलाता है।"

आधुनिक युग में महाकाव्य की परिभाषाओं में परिवर्तन हुआ है। भारतीय तथा पाश्चात्य आलोचकों ने जो महाकाव्य की परिभाषा दी है वह व्यापक है। लौंजाइनस ने एक जगह लिखा है — "महान प्रतिभा निर्दोषता से बहुत दूर होती है। क्योंकि सर्वांगीण शुद्धता में अनिवार्यतः क्षुद्रता छिपी होती है। फिर भी ग्रहण में कुछ न कुछ छिद्र छिपा होता है।"

'कामायनी' के शिल्पविधान में निश्चय ही अनेक प्रकार के छिद्र रह गए हैं। अनेक दोषों का अन्वेषण आज भी आग्रह से किया जाता है। फिर भी, उसके गौरव के प्रति आलोचक आकृष्ट हो रहे हैं तो उसके अपूर्णता के प्रति इतना आग्रहशील नहीं होना चाहिए। इस प्रकार 'कामायनी' एक विवादग्रस्त कृति होते हुए भी एक महान ग्रंथ है।

आधुनिक युग में तीन प्रकार के महाकाव्यों की रचना हुयी है। पहला, जिनमें युग-चेतना का महान गुण विद्यमान हो। ~~[illegible]~~ युग-चेतना अर्थात् कथानक, चरित्र एवं महान उद्देश्य

उद्देश्य के साथ महती काव्य-कल्पना का योग उपस्थित हो। दूसरे प्रकार का महाकाव्य वह है जो शास्त्रीय लक्षणों की कसौटी पर खरा उतरे और तीसरे प्रकार का महाकाव्यों में बाह्य लक्षण ही मिलते हैं, न तो उसमें जीवन्त कथा होते हैं न उदात्त रचना शैली और न वह महाकाव्य की गुरुता एवं महत्ता से ओत-प्रोत होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर जब हम 'कामायनी' का मूल्यांकन करते हैं तब निम्न तत्वों का ध्यान रखना पड़ता है — सुसंबद्ध महान कथानक, महान चरित्र जिसके विश्लेषण में गहराई हो, देश-काल से सम्बद्ध होना आवश्यक है। उसका उद्देश्य महान हो। भाषा-शैली में उदात्तता हो। इन सभी कसौटी पर ही 'कामायनी' के महाकाव्यत्व पर चर्चा की जा सकती है।

कामायनी का कथानक सम्पूर्ण मानवता के विकास की गाथा है जिसे कवि ने साहसपूर्वक कहने का प्रयास किया है। जहाँ तक मानव-जीवन का प्रश्न है वहाँ भावों एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखकर कथानक को प्रासंगिक बनाया गया है। इसमें मानव-चेतना और उसके हाव-भाव को पर्याप्त गहराई से लिया गया है। मानसिक विश्लेषण को तो कई सर्गों में बाँटकर उनके भावों पर ही नाम दिया गया है। मनुष्य की प्रबल समस्या आनंद की है। इसमें प्रसाद जी ने कहा है कि भौतिक विषमताओं में लीन रहने वाला मानव संतप्त, विक्षिप्त व अशांत दिखलाई देता है, वह आध्यात्मिक समरसता अथवा अभेदवाद की ओर क्रमशः बढ़कर अपने जीवन को सुखी कर सकता है।

'कामायनी' का मूल भाव 'शान्तरस' है। जिस प्रकार कथानक जीवन को अखण्डता में ग्रहण करता है। उसका प्रतिपाद्य जीवन का एकांगी न होकर सर्वांगीण सिद्धि है।

भावों की दृष्टि से कामायनी एक उत्कृष्ट काव्य है। काव्य शास्त्र की दृष्टि से महाकाव्य का नायक धीरोदात्त होना चाहिए। इसके आधार पर मनु का चरित्र एक धीरोदात्त नायक का नहीं कहा जा सकता। मनु का व्यक्तित्व विकास-मानव के करीब है। शैव दर्शन के अनुसार मनु का चरित्र पाशव या आणव है। जो प्रारंभ से होकर बाद में विकास की स्थिति को प्राप्त होता है। यह 'कामायनी' के प्रतिपाद्य के अनुरूप ही है। अपनी विशिष्ट स्थिति के कारण ही मनु अहंकार

P.T.O

स्वार्थ, इन्द्रिय-लिप्सा, अस्थिरता और अनगढ़ मानव चेतना की प्रवृत्तियों से ऊपर उठ नहीं पाता। किंतु, इन सभी अवगुणों से मुक्त होकर अंत में वह विजय को प्राप्त कर समरस मानव बनकर शिवत्व की सिद्धि प्राप्त करता है। जो वह धीरोदात्त नायक की उपस्थिति को दर्ज करता है।

श्रद्धा का चरित्र अत्यन्त उज्ज्वल है। वह विश्व-मंगल भावना की प्रतीक है। व्यक्तित्व के विकास की अपेक्षा श्रद्धा मनु की भाँति अनगढ़ मानव-चेतना का रूप नहीं है। श्रद्धा केवल उच्चतर प्रवृत्तियों का रूप प्रस्तुत करती है। इड़ा के विषय में भी यह सत्य है। उसके शरीर में अपेक्षित ऐश्वर्य एवं गरिमा है। यद्यपि पाश्चात्य महाकाव्यों के चरित्र जैसी दृढ़ता और मूर्त सघनता उसमें नहीं है, फिर भी, इसके सभी पात्र पर्याप्त उदात्त गुणों से संपन्न हैं।

प्रायः महाकाव्यों में खलनायक की कल्पना की गयी है। इस दृष्टि से 'कामायनी' को असफल नहीं कहा जा सकता। रूपकत्व की प्रधानता के कारण 'कामायनी' में तामसिक प्रवृत्ति को ही खलनायक माना गया है।

महाकाव्य देशकाल से बँधा होता है। इस दृष्टि से कामायनी में अनेक स्थल ऐसे आए हैं जिसमें अंकन, विश्लेषण, समस्याएँ और समाधान परिलक्षित होते हैं जो सर्वकालिक और सर्वदेशीय हैं। इसमें सृष्टि का आदि युग चित्रित है। आज के वर्ग-भेद — ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, शासक और शासित, शोषक-शोषित एवं उनका संघर्ष आदि स्पष्ट रूप से उभरकर आए हैं। विश्व बंधुत्व की भावना का संकेत भी यहाँ देखने को मिलता है —

"वर्गों की खाई बन फैली कभी नहीं जो जुड़ने की।
शोषण कर जीवनी बना दी जर्जर झीनी।।"

महाकाव्य में उद्देश्य की महानता सबसे ऊपर है। इस दृष्टि से 'कामायनी' विश्व का सबसे अप्रतिम ग्रंथ है। इसका उद्देश्य है - भाव-वृत्ति, कर्म-वृत्ति, ज्ञान-वृत्ति के सामंजस्य के द्वारा समरसता और उसके फलस्वरूप आनंद की सिद्धि।

P.T.O

महाकाव्य की अंतिम विशेषता है उदात्त-शैली। इसकी शैली सर्वत्र लोकोत्तर एवं लोक कल्याणकारी है। पाश्चात्य आचार्यों ने शैली को गुण माना है। किंतु कामायनी की शैली में इस गुण की प्रचुरता इतनी मात्रा में है कि यह शैली के शिखर पहुँच गया है। यहाँ अद्भुत सौंदर्य, विराट अलंकार एवं लक्षणा-व्यंजना की भरमार है। कल्पना तथा भावना का चमत्कार के कारण इस शैली में मूर्त-विधान की एवं बिम्ब-योजना की अद्भुत समृद्धि मिलती है।

इसकी भाषा शुद्ध खड़ी बोली है। इसमें सर्वत्र चित्रभाषा एवं प्रतीक भाषा के साथ ही उदात्त शैली भी असाधारणता के प्रति आग्रह है। इसकी शैली सूक्ष्म से सूक्ष्म और उदात्त से उदात्त भावों का अंकन करने में सफल है। शैली के व्यक्तित्व कलेवर में सघनता आदि गुणों का निर्वाह हुआ है। यहाँ विधान ही अंतरंग हैं और घटनाओं की विकास-भूमि मानव-चेतना है, इसलिए प्रगीत तत्व बाधक न होकर साधक ही हुआ है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि 'कामायनी' का महाकाव्यत्व असंदिग्ध है। इसमें महाकाव्य के सभी गुण विद्यमान हैं। केवल एक ही निपर्यय है कि कार्य-व्यवहार का अभाव है जिसके परिणाम स्वरूप कथा में वाँछित भौतिक विस्तार नहीं आ सका है। चूँकि 'कामायनी' मानव-विकास की कथा है, इसलिए यह जीवन-विकास की कथा है। मानव सभ्यता के विकास में यह विराट रूपक साहित्य का इतिहास में एक नवीन प्रयोग है।

P. G. semester III ec...

'Kamayani ek Mahakaya'